(5) 28/4/20

बन्दी बना लिये गये किन्तु बड़ी संख्या में बिरसा के अनुयायियों ने धावा बोलकर बिरसा को मुक्त करा लिया और सिपाहियों को अपनी जान बचाकर भागना पड़ा। 24 अगस्त, 1895 को बिरसा को पुनः गिरफ्तार कर लिया गया। उसे 2 वर्ष की सज़ा और 50 रु. जुर्माना किया गया। 30 नवम्बर, 1897 में बिरसा जेल से छूट गया। इसके पश्चात बिरसा के नेतृत्व में आन्दोलन ने वास्तविक रूप धारण किया। बिरसा के काजलकद गांव में पहुंचते ही उनके अनुयायी बड़ी संख्या में उसे मिलने आने लगे। डुम्बरी पहाड़ पर एक विशाल सभा की गई जिसमें एक राजनीतिक संगठन की स्थापना की गयी। इस तरह बिरसा आन्दोलन ने अन्ततः एक राजनैतिक स्वरूप धारण कर लिया। इस राजनीतिक संगठन में मूलतः चार प्रकार के व्यक्ति थे जिन्होंने बिरसा आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अभिनीत की। ये थे:

1. वे व्यक्ति जो धर्म से जुड़े थे। ये लोग जनजातियों में धर्म का प्रचार कर एकजुटता लाने का प्रयास करते थे।
2. दूसरे वे व्यक्ति थे जो विभिन्न स्थानों पर बिरसा आन्दोलन और संगठन की सूचनायें पहुंचाते थे।
3. तीसरे वे कर्मठ, जोशीले और साहसी व्यक्ति थे जो खुले आम विद्रोह करने के पक्षधर थे।
4. चौथे बिरसा मोर्चे में सरदारों की भूमिकायें थी।

सन् 1899 का वर्ष बिरसा आन्दोलन में कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। सिंहभूमि के कोटा गोरा स्थान में 60 मुख्य गुरुओं की एक सभा की गयी जिसमें निर्णय लिया गया कि हिंसा के माध्यम से जमीन्दारों, राजाओं और सरकार बाहरी लोगों को मारने की पक्षधर थे। ये विद्रोह से इस प्रकार का आतंक उत्पन्न कर देना चाहते थे कि वे भयभीत होकर बिरसा राज्य को स्वीकार कर लें।

इस वर्ष के आन्दोलन पर एक दृष्टि डालें तो निम्नलिखित तथ्य सामने आते हैं। ये तथ्य इस बात के संकेत हैं कि बिरसा मुण्डा आन्दोलन को आज इतना महत्व क्यों दिया जाता है -

(1.) योजनाबद्ध रूप में मुन्डा जनजाति के लोगों ने क्रिसमस के एक दिन पूर्व ईसाइयों पर तीरों से प्रहार करें। गिरजाघरों में तीरों से प्रहार किये। तीर चलाने की घटनायें अनेक क्षेत्रों में की गयीं।

(2.) कुछ गांवों के घर भी आगजनी के शिकार हुए।

(3.) जहाँ विद्रोह भड़के थे वहाँ सैनिकों को तैनात कर दिया गया। साथ ही सेना पर जो खर्च आयेगा उसे स्थानीय व्यक्तियों को ही सहन करना होगा। इस प्रक्रिया से जनजातियों में असन्तोष की लहर फैल गयी। हालांकि इसका उद्देश्य था कि जनजाति के लोग किसी तरह की सहायता विद्रोहियों को न दें। इस 24 दिसम्बर, 1899 के विद्रोह की

Scanned with CamScanner

सफलता इस तथ्य में समाहित है कि इस विद्रोह की चिंगारी दूर तक उड़कर पहुंच चुकी थी। इस आन्दोलन की सफलता को देखते हुए बिरसा ने यह घोषणा की कि अंग्रेज और प्रशासक सहयोगी ही उनके शत्रु हैं।

(4) अंग्रेज शासक मुण्डा और बिरसा आन्दोलन को दबाने के लिये घरों में घुसते। बिरसा और उनके अनुयायियों को पूछते और आंतक फैलाने के लिये गोलियाँ भी चलाते।

(5) इस विद्रोह की विशेष बात यह है कि युवकों का अंग्रेजों के विरुद्ध तनकर खड़ा होना और महिलाओं का आगे आना। इस की बढ़ती शक्ति को उस समय चार चाँद लग गये जब आस-पास के लोग भी इसमें शामिल हो गये और विद्रोहियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर उनका साथ देने लगे। इन सभी का लक्ष्य अंग्रेज प्रशासकों को मत देना और किसी भी रूप में आत्म समर्पण न करना।

(6.) बिरसा मुण्डा का विद्रोह थमने का नाम नहीं ले रहा था। उसकी शक्ति में निरन्तर वृद्धि हो रही थी इसलिये बड़े अंग्रेज अधिकारियों ने आन्दोलन को दबाने के लिए बड़ी संख्या में सैनिक और पुलिस कर्मियों का प्रयोग किया। ये गांव-गांव में छापा डालते। बिरसा अनुयायियों की खोज करते और उन्हें बन्दी बनाते। इसके बावजूद भी विद्रोहियों की गोपनीय बैठक होती रहती थी। यह हिम्मत न हारने की दास्तान बताता है।

(7.) शक्ति के सम्मुख निहत्थे मुण्डा लोग कब तक डटे रहते आखिरकार अंग्रेजों के दमन ने उन्हें तोड़ दिया। जनजातियों के तीर और भाले कब तक अंग्रेजों की गोलियों की बौछार का सामना करते। यह सत्य है कि यह आन्दोलन बहुत बड़े क्षेत्र में फैल चुका था जिसने अंग्रेज शासकों को झकझोर कर रख दिया।

जनजातियों में विद्रोह की चिन्गारी जो अन्दर ही अन्दर सुलग रही थी उससे धुंआ उठने लगा था और किसी दुर्घटना की आशंका पूरे समाज को मिल रही थी। 1899-1900 के विद्रोह के पीछे समस्त जनजातियों की यातनायें पक रही थी। बन्द फोड़े की तरह टपकने लगी थी। आन्दोलन की पृष्ठभूमि पहले से ही तैयार हो चुकी थी कि अकाल के समय जमीन्दारों ने किसी प्रकार की सहायता नहीं की। वे मौज उड़ा रहे थे और जनजाति के व्यक्ति भूख से तड़प रहे थे। इसलिये 1995 के आन्दोलन में सुझाव दिया गया कि जमीन्दारों को लगान न दिया जाय और मुण्डाओं को उनकी जमीन वापस की जाय जिस पर धनाढ्य लोगों ने ज़बरदस्ती कब्जा कर रखा है। मुन्डाओं ने भूमि समस्या को प्राथमिकता प्रदान की क्योंकि यह उनके जीवन और जीविका का आधार था। उन्होंने आवाज बुलन्द की कि मुण्डा ही वास्तविक रूप में भूमि के मालिक है। वे ही जमीन के मालिक हैं। मुण्डाओं ने जोर-शोर से यह कहना आरम्भ कर दिया कि बाहरी लोग उनकी जमीन को अनेक प्रलोभन देकर हथिया रहे हैं। इन्हें जमीन से बेदखल किया जाय। 1899-1900 में मुण्डाओं के आन्दोलनों से यह छन कर सामने आ गया कि जब साम्राज्यवादी शक्तियाँ और मिशनरी लोग उनके

Scanned with CamScanner

क्षेत्र से पूरी तरह निष्काषित कर दिये जाय अथवा जनजातियों के क्षेत्र से उन्हें हटा दिया जाय। ये उनकी भूमि पर ही कब्जा नहीं करते थे बल्कि उनके सामाजिक सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन में भी हस्तक्षेप करते थे। जनजातियों की एकजुटता की भावना ने यह निर्णय लिया कि बिरसा के नेतृत्व में एक राज्य की स्थापना की जाय और उस पर जनजातियों का वर्चस्व रहे। इस राज्य में बिरसा धर्म का महत्व होगा। इस तरह राजनीति और धर्म का सम्मिश्रण बिरसा राज्य की कल्पना में था। बिरसा आन्दोलन को शान्तिपूर्वक चलाने का पक्षधर था किन्तु उसके अनुयायी अंग्रेज शासकों, प्रशासकों और जमीन्दारों, कर्मचारियों को मौत के घाट उतार दिया जाय। इसके अलावा जनजातियों के पास दूसरा कोई रास्ता नहीं है जिससे वे अपनी जमीन वापस पा सके और जमीन्दारों के शोषण से छुटकारा पा सके। इसी वर्ष विद्रोह तीव्र रूप में अग्रसर हो गया। इनका आन्दोलन इतना उग्र हो गया कि लोगों को चर्च जाते समय तीर लगने लगे। लोग जख्मी होने लगे। जर्मन मिशन फूंक दिया गया। स्थिति अन्ततः यह हो गयी कि जनजातियां और सरकार आमने-सामने आ गयी, अनेक थानों पर इन्होंने खुलकर धावा बोला। 5 जनवरी, 1900, को समस्त मुण्डा क्षेत्र में जंगल के आग की तरह बिरसा आन्दोलन फैल गया।

3 फरवरी, 1900 को बिरसा बन्दी बना लिये गए। इनके 482 अनुयायियों पर मुकदमा भी चलाया गया और राँची जेल में बिरसा, एक साहसी, बहादुर, नेता की मृत्यु हैजे से 9जून 1900 को हो गयी। बिरसा आन्दोलन का इतिहास अंग्रेज, जमीन्दार और शोषकों के विरुद्ध था जिसने ब्रिटिश शासकों, पुलिस और जमीन्दारों के दाँत खट्टे कर दिये थे। बिरसा आन्दोलन के निम्नलिखित परिणाम महत्वपूर्ण है :[30]

1. बिरसा आन्दोलन के परिणामस्वरूप सरकार ने मुण्डा लोगों को जमीन्दारों के चगुंल से बचाने तथा भूमि की समस्या हल करने का प्रयत्न शुरू किया।
2. बिरसा आन्दोलन के 10 वर्षों के अन्दर ही सरकार ने भूमि बन्दोबस्ती का कार्य पूरा किया।
3. 1908 ई. के. टेनैन्सी अधिनियम द्वारा आदिवासियों की गैर आदिवासी के हाथ जमीन की बिक्री रोक दी गई।
4. 1902 ई. में गुमला तथा 1980 में खूंटी अलग-अलग अनुमण्डल बना दिये गए। इन स्थानों में कचहरियाँ स्थापित की गई। फलस्वरूप आदिवासियों को रांची जाने की जरूरत नहीं रही।
5. बिरसा आन्दोलन के परिणामस्वरूप समाज सुधार तथा धर्म संबंधी अनेक आन्दोलन मुण्डाओं में उठे।
6. जादू-भूत-प्रेत तथा बलिदान की निन्दा की गई।

30. हरिशचन्द्र उत्प्रेती, भारतीय जनजातियाँ - संरचना एवं विकास, पृष्ठ 355.

Scanned with CamScanner

7. बिरसा आन्दोलन के परिणामस्वरूप ही ताना भगत तथा अन्य आन्दोलन सरकार के विरुद्ध शुरु किये गए।

इस आन्दोलन से यदि निष्कर्ष निकाला जाय तो कहा जा सकता है कि बिरसा जो आरम्भ में एक धार्मिक व्यक्ति के रूप में उभरा और अन्त में उसने धर्म को ही हथियार की तरह अंग्रेजों और जमीन्दारों के विरुद्ध प्रयोग किया। अपनी जनजाति को उसने अपने प्रवचनों के आधार पर एकजुट किया, वहीं उसने अंग्रेज शोषकों के विरुद्ध उन्हें खड़ा भी किया। इस आन्दोलन ने कुछ समय के लिये ही सही अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिये।

कुमार सुरेश सिंह बिरसा आन्दोलन का विश्लेषण करते हुए लिखते हैं -

"सम्भवतः यह आदिवासी आन्दोलन का एक बेहतरीन दस्तावेजी अध्ययन है जो एक समृद्ध लोक साहित्य और अभिलेखीय एवं मानवशास्त्रीय सामग्रियों को भी संयुक्त करता है। यह सामाजिक या धार्मिक और राजनीतिक आयाम से भरा एक पूर्ण आन्दोलन भी था जिसने धार्मिक, जातीय और राजनीतिक आन्दोलनों की पूरी श्रृंखला को प्रभावित किया। वास्तव में मुण्डा धर्म एवं समाज के पुनर्गठन और मुण्डा राज व स्वतंत्रता की स्थापना के दोहरे उद्देश्य गूंज बाद के सभी आन्दोलनों में उठती रही और पहचान एवं स्वायत्तता के लिये समकालीन आन्दोलनों में इसकी जबरदस्त प्रतिध्वनि बनी रही[31]"

Scanned with CamScan